WOODS

8

हिंदी दर्पण

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

हिंदी दर्पण–8

1. भारत जननी! अंब!

(क) 1. छत्र 2. महावर 3. सरिताओं की 4. ये सभी 5. महादेवी वर्मा **(ख)** उदधि शंख औ तूर्य बादल बजाता, विहग रब सदा वंदना गीत गाता, नम कर रहे सूर्य औ चंद्र तारे। सृजन हास में, कोप में पर प्रलय है। **(ग)** 1. भारत माँ के अंग पर फसलों का हरे रंग वाला वस्त्र सुशोभित हो रहा है। 2. हाँ 3. रजत स्वर्ण किरणें भारत माता पर न्यौछावर हो रही हैं। आकाश के विभिन्न रंग इसका छत्र बने हैं। इसके अंग पर फसलों का हरे रंग का वस्त्र सुशोभित हो रहा है। दिशाएँ इसके चरणों में महावर लगा रही हैं। 4. हमें अपनी मातृभूमि की रक्षा एवं सम्मान करने की प्रेरणा मिलती है। 5. माँ के हास्य में सृजन एवं क्रोध में प्रलय छुपा हुआ है। **भाषा की बात–(क) जननी**–माँ, माता **गगन**–आकाश, नभ **अनिल**–हवा, समीर **विहग**–पक्षी, खग **बादल**–घट, जलद **(ख)** 1. सुयोग्य 2. अग्रगण्य 3. स्वदेशी 4. मानव निर्मित 5. कार्यक्षमता **(ग)** निंदा, सृष्टि, धरा, अयोग्य, अनिर्मित, घृणा, तिरस्कार, रूदन **(घ)** मुकुट, सुंदर, चाँदनी, हरिताम, शस्य, सूर्य, प्रलय, वत्सला **(ङ)** स्वयं करें। **करने की बारी**–स्वयं करें।

2. अनमोल भेंट

(क) 1. बारह वर्ष की आयु में 2. चन्ना 3. पद्मा नदी के किनारे 4. उसकी बहन ने 5. लाट साहब **(ख)** 1. घुटनों, रायचरण, हाथों, हँसकर, साहब, चन्ना, हृदय, दोनों, घोड़ा **(ग)** फलन घमंडी था। उसका स्वास्थ्य व शक्ल-सूरज अच्छी थी। वह अपव्ययी था। वह सजने-सँवरने पर बहुत ध्यान देता था। **(घ)** 1. रायचरण अनुकूल बाबू के बच्चे को गाड़ी में बैठाकर बाहर ले गया। खेतों में खूब पानी भरा था। बच्चे ने फूलों का गुच्छा देखकर फूल लेने की ज़िद की। रायचरण ने उसे बहलाना चाहा, किंतु वह न माना। विवश होकर रायचरण बच्चे का मन रखने के लिए घुटनों तक पानी में उतर गया और फूल तोड़ने लगा। बच्चा तनिक देर गाड़ी में मौन बैठा रहा, फिर उसका ध्यान लहराती हुई नदी की ओर गया। वह चुपके से गाड़ी से उतरा। पास ही एक लकड़ी पड़ी थी, वह उसने उठा ली और भयानक नदी के तट पर पहुँचकर उसकी लहरों से खेलने लगा और लहरों में बह गया। 2. बच्चे के गायब हो जाने पर लोगों को शंका हो रही थी कि निर्वासितों का समूह बच्चे को न ले गया हो। 3. अनुकूल बाबू की पत्नी को बच्चे के खो जाने के विषय में यह शंका थी कि रायचरण ने कहीं बच्चे को निर्वासितों के हाथों न बेच दिया हो! 4. रायचरण नौकरी छोड़कर गाँव इसलिए लौट आया क्योंकि अनुकूल बाबू की पत्नी ने क्रोध और आवेश की दशा में उसे घर से बाहर निकाल दिया था। 5. जब रायचरण का बच्चा घुटनों के बल चलने लगा, तब वह घरवालों की नज़र बचाकर बाहर निकल जाता। रायचरण जब उसे दौड़कर पकड़ता तो वह चंचलता से उसको नन्हे मालिक की तरह मारता था। उस समय रायचरण के नेत्रों के सामने अपने उस नन्हे मालिक की सूरत आ जाती, बच्चे ने बोलना शुरू किया, तो वह पिता को 'बाबा' और बुआ को 'मम्मा' इस ढंग से कहता था, जिस ढंग से रायचरण का नन्हा मालिक बोलता था। रायचरण उसकी आवाज़ से चौंक उठता। इन सब बातों से उसे पूर्ण विश्वास था, कि नन्हे मालिक ने उसके घर जन्म लिया है। **भाषा की बात– (क)** न्यायाधीश, गहना, गायब, आज्ञा, निवेदन, गुस्सा **(ख)** उल्लेख, परमानंद, सज्जन, परमात्मा **(ग)** जुर्म, अलावा, संदेह, सबूत, नित्य, लायक **करने की बारी**–स्वयं करें।

3. संतुलित आहार-स्वास्थ्य का आधार

(क) 1. पाँच 2. दो 3. दोनों से 4. विटामिन 'सी' 5. दोनों की **(ख)** 1. हड्डियाँ 2. पोषण 3. कार्बोहाइड्रेट्स 4. सी 5. ए **(ग)** 1. प्रोटीन से हमारे शरीर का निर्माण होता है। इससे सशक्त मांसपेशियों, दिमाग और रक्त का निर्माण होता है। प्रोटीन से कार्य करने की शक्ति मिलती है और शरीर में बीमारियों से लड़ने की ताकत आती है। 2. वसा शरीर को ताकत देती है। 3. कैल्सियम हमारे लिए इसलिए आवश्यक है क्योंकि कैल्सियम से हड्डियाँ मज़बूत होती हैं। 4. पौष्टिक तत्वों से शरीर की आवश्यकताएँ पूर्ण होती हैं, शरीर का निर्माण होता है, शरीर को शक्ति मिलती है। 5. विटामिन संतुलित भोजन का आवश्यक पौष्टिक तत्व है। इससे शरीर में रोगों से लड़ने की शक्ति आती है। 6. विटामिन दो प्रकार के हैं-(1) चिकनाई में न घुलने वाले विटामिन (ये विटामिन 'ए' और 'डी' हैं।) तथा (2) पानी में घुलने वाले विटामिन (ये विटामिन 'बी' कॉम्प्लैक्स तथा 'सी' हैं।) ये शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। इनसे शरीर में रोगों से लड़ने की शक्ति आती है। **भाषा की बात–(क)** अज्ञान, कमज़ोर, अनावश्यक, छाँव, उपस्थिति, काला **(ख) आँख**–नेत्र, चक्षु **दूध**–दुग्ध, पय **व्यक्ति**–मनुष्य, आदमी **शरीर**– तन, काया **(ग)** स्वयं करें। **करने की बारी**–स्वयं करें।

4. नशा

(क) 1. ज़मींदार 2. क्लर्क 3. दो पैसे 4. मनचला 5. कहार ने **(ख)** 1. मेहनती, बुद्धिमान 2. ईश्वरी 3. चकित 4. लैंप 5. रेलगाड़ी **(ग)** 1. ईश्वरी ज़मींदारों के पक्ष में तर्क देता था। कि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते, छोटे-बड़े मनुष्य हमेशा होते रहते हैं और होते रहेंगे। 2. लेखक ने यह सोचकर ईश्वरी के साथ उसके घर जाने का निश्चय किया कि ईश्वरी के साथ परीक्षा की अच्छी तैयारी हो जाएगी। 3. अपने घर ले जाने से पहले ईश्वरी ने लेखक को यह समझाया कि भाई, एक बात का ख़्याल रखना वहाँ अगर तुमने ज़मींदारों की निंदा की तो मामला बिगड़ जाएगा और मेरे घरवालों को बुरा लगेगा। 4. ठाकुर ने लेखक से प्रार्थना की "आजकल ज़मींदार लोग बड़ा ज़ुल्म करते हैं सरकार! हमें भी अगर आप अपने इलाके में थोड़ी-सी ज़मीन दे दें, तो चलकर वहीं आपकी सेवा में रहें।" लेखक ने यह कहकर उससे अपना पीछा छुड़ाया, "अभी तो मेरा कोई अधिकार नहीं है भाई, लेकिन ज्यों ही अधिकार मिला, मैं सबसे पहले तुम्हें बुलाऊँगा। तुम्हें मोटर ड्राइवरी सिखाकर अपना ड्राइवर बना लूँगा। 5. लौटते समय रेल के डिब्बे में बैठना लेखक को इसलिए बुरा लग रहा था क्योंकि रेल के डिब्बे में बहुत भीड़ थी और लेखक को बहुत मुश्किल से थोड़ी जगह में बैठकर आना पड़ रहा था। 6. इस कहानी का नाम 'नशा' इसलिए रखा गया है क्योंकि मानव जिस परिस्थिति एवं जीवन में पला बढ़ा होता है परिस्थिति बदल जाने पर भी आदत वही बनी रहती है। **भाषा की बात–(क)** स्वयं करें। **(ख)** आतंक+इत, तमीज+दार, इंसान+इयत, नीति+इक, जमींदार+ई, घर+वाला, गधा+पन, नम्र+ता **(ग) भाई**–भ्राता, बंधु **ईश्वर**–ईश, प्रभु **मनुष्य**– मानव, मनुज **राजा**–नृप, नरेश **पानी**–जल, नीर **(घ)** स्वयं करें। **करने की बारी**–स्वयं करें।

5. सुभाष का पत्र

(क) 1. अनाथ बंधु को 2. 9 नवंबर को 3. अपने घर जैसी 4. मांडले जेल में **(ख)** 1. चौदह 2. विचित्र 3. कल्पना 4. एकत्व 5. अंतर-बाह्य **(ग)** 1. नेताजी के लिए जेल में दुःख झेलना भी गौरव की बात इसलिए थी क्योंकि वे मातृभूमि के लिए जेल में दुःख झेल रहे थे। 2. नेताजी ने

जेल में आकर आत्म विश्लेषण कर निर्णय लेना व कैदी की जीवन शैली का अनुभव सीखा। 3. जेल से छूटने की कल्पना करने पर नेता जी को तब जितना आनंद होता था, उससे कहीं अधिक भय होता था, यह सोचकर, कि कहीं तैयार न हो पाएँ और कर्तव्य की पुकार हो जाए, तब मन में आता था, कि जब तक प्रस्तुत न हो जाएँ, तब तक छूटने की बात ही न उठे। 4. नेताजी को जेल में उस सूर्योदय की याद आती थी जिसमें बंगाल के कवियों ने, बंगाल के साधकों ने बंग-जननी का दर्शन किया था। 5. देशबंधु ने अपने गीत काव्य में कहा है-''बंगाल के जल और बंगाल की मिट्टी में एक चिरंतन सत्य निहित है। **भाषा की बात–(क) मेहमानी**-मेहमान (मूल शब्द), ई प्रत्यय, **कृतज्ञता**-कृतज्ञ (मूल शब्द), ता (प्रत्यय), **सत्याग्रही**-सत्य (उपसर्ग) आग्रह (मूल शब्द), ई (प्रत्यय), **विनम्रता**-वि (उपसर्ग) नम्र (मूल शब्द) ता (प्रत्यय), **ईमानदारी**-ईमान (मूल शब्द) दारी (प्रत्यय), **वास्तविक**-वास्तव (मूल शब्द) इक (प्रत्यय) **आंतरिक**-अंतर (मूल शब्द) इक (प्रत्यय) **(ख) व्यक्तिवाचक**–बर्मा, सुभाष, देशबंधु, रवि **जातिवाचक**–मकान, जेल, पुस्तक, पत्र **भाववाचक**–पागलपन, सुख, उदासी, मिठास **(ग)** स्वयं करें। **करने की बारी**–स्वयं करें।

6. सबसे बड़ा गरीब

(क) 1. बुखार 2. ये दोनों 3. सौ रुपये 4. 18 वर्ष 5. 4 महीने **(ख)** 1. सुखिया ने लोगों से 2. कंपाउंडर ने सुखिया से 3. डॉक्टर ने कंपाउंडर से 4. कंपाउंडर ने सुखिया से 5. डॉ० आनंद ने डॉक्टर प्रसाद से 6. सुखिया ने डॉक्टर प्रसाद से **(ग)** 1. विवाह के दो वर्ष बाद सुखिया के सिर पर से पति का साया उठ गया। सुखिया के बेटे को तेज जानलेवा बुखार आया। 2. डॉ० प्रसाद पैसे के लालची व निर्दय व्यक्ति थे। 3. डॉक्टर प्रकाश ने डॉक्टर प्रसाद को एक लिफ़ाफ़ा दिया। उन्होंने लिफ़ाफे में ऑपरेशन की जितनी फ़ीस जमा की थी, डॉ० प्रकाश द्वारा सब उन्हें वापस कर दी गई थी क्योंकि डॉ० प्रकाश की दृष्टि में डॉ० प्रसाद सबसे बड़े गरीब थे। 4. लेखक के अनुसार इस पाठ का सबसे बड़ा गरीब डॉ० प्रसाद हैं क्योंकि जिसकी उसने पैसे के अभाव में चिकित्सा नहीं की थी उसी ने उसके बेटे का मुफ्त इलाज कर दिया। **भाषा की बात–(क)** हानि, घृणा, दुख, मरण, अंत, अज्ञानी, अपमान, गरीब **(ख)** 1. अत्यंत खुश होना 2. बहुत व्याकुल हो जाना 3. विपरीत परिस्थिति में उन्नति करना 4. अत्यधिक उन्नति करना। **(ग)** स्वयं करें। **करने की बारी**–स्वयं करें।

8. पथ की पहचान

(क) 1. पहले 2. अपने पैरों के निशान 3. स्वप्न 4. काँटा **(ख)** अनगिनत राही गए इस राह से उनका पता क्या, पर गए कुछ लोग इस पर छोड़ पैरों की निशानी। **(ग)** 1. प्रस्तुत कविता में 'पथ' शब्द का भाव मार्ग है। 2. प्रस्तुत कविता में 'बटोही' शब्द का प्रयोग पथिक के लिए किया गया है। 3. प्रस्तुत कविता में कवि कहना चाहता है, कि चलने से पहले अपने रास्ते को अपनाइए। यह सत्य है, कि कोई भी रास्ता बिल्कुल बाधाहीन नहीं होता। मंज़िल तक पहुँचने में शूल और फूल दोनों ही आपका स्वागत करेंगे। इन्हें अपनाकर ही आप जीवन पथ पर आगे बढ़ सकेंगे। 4. स्वप्नों को पूरा करने के लिए ही लोग सुयोग्य बन जाते हैं। **भाषा की बात–(क)** लच्छा, माह, गरल, योग, मोच, अनर्थ **(ख) दिन**–दिवस, वार **पथ**–रास्ता, मार्ग **आँख**– नेत्र, चक्षु **(ग)** स्वयं करें। **करने की बारी**–स्वयं करें।

9. नींव की ईंट

(क) 1. रामवृक्ष बेनीपुरी 2. शिवम् 3. बलिदान 4. अपनी हड्डियाँ 5. सत्य **(ख)** 1. सत्य 2. सत्य 3. नींव 4. कँगूरा 5. नौजवानों **(ग)** 1. नींव की ईंट का अर्थ मजबूती है। 2. ईंट ने अपना अस्तित्व इसलिए विलीन कर दिया, ताकि संसार एक सुंदर सृष्टि देखे। 3. सुंदर सृष्टि से अभिप्राय नवनिर्माण है। 4. सुंदर सृष्टि बलिदान खोजती है। **(घ)** 1. नींव की ईंट इमारत को मजबूती व आधार देती है तथा कँगूरे की ईंट इमारत को सुंदरता प्रदान करती है। इसलिए दोनों वंदनीय हैं। 2. नींव की ईंट ने अपने लिए अंधकूप इसलिए कबूल किया, ताकि ऊपर के उसके साथियों (ईंटों) को स्वच्छ हवा मिलती रहे, सुनहरी रोशनी मिलती रहे। 3. विदेशी वृत्रासुर का तात्पर्य विदेशी शासक हैं। वे अंग्रेज़ थे। 4. आजकल के नौजवानों में पद, प्रतिष्ठा, नेतृत्व, सुखः सुविधाएँ पाने के लिए कँगूरा बनने की होड़ मची हुई है। **भाषा की बात–(क)** गायब, वन्य, इच्छा, समर्पित, राजा, खूबसूरत **(ख) इमारत**–स्त्रीलिंग, **धर्म**–पुल्लिंग, **दुनिया**–स्त्रीलिंग, **नींव**–स्त्रीलिंग, **ईंट**–स्त्रीलिंग, **सृष्टि**–स्त्रीलिंग **(ग)** 1. किसे कहाँ गाड़ दिया है? 2. कँगूरा क्यों मुस्कुरा रहा है? 3. लाखों वीर अपनी शहादत के कारण कैसे याद किए जाएँगे? 4. यह सुंदर इमारत कब बनी थी?

10. दादी माँ

(क) 1. सौ साल 2. काल्पनिक 3. कूबड़ के कारण 4. चाँदी–सी चमकीली 5. झुर्रियों से **(ख)** दादी माँ 2. विचलित व भावुक 3. मुखाकृति 4. स्कूल 5. सफेद **(ग)** 1. बच्चे को स्कूल दादी जी छोड़ने जाती थीं। 2. स्कूल छोड़ने की एक वजह यह भी थी, कि वह स्कूल गुरुद्वारे के साथ ही लगा हुआ था। 3. गुरुद्वारे का पुजारी ही बच्चों को वर्णमाला सिखाता था। 4. दादी माँ गुरुद्वारे के भीतर बैठी धर्मग्रंथ को बाँधा करतीं। 5. लौटते हुए उन्हें गुरुद्वारे के करीब ही गाँव के कुत्ते दिखाई दे जाते थे। **(घ)** 1. प्रार्थना के समय शब्दों को दोहराते समय दादी जी के होंठ निरंतर फड़कते रहते थे। 2. दादी जी कूबड़ के कारण एक हाथ कमर पर टिकाए और दूसरे से रामनामी माला के मनके फेरतीं सारे घर करती करतीं थीं। 3. बालक खुशवंत दादी को पश्चिमी ज्ञान–विज्ञान से संबंधित छोटी–छोटी बातें सुनाता। गुरुत्वाकर्षण के नियमों, आर्किमिडिज़ के सिद्धांतों और धरती के गोलाकार होने के बारे में समझाता। 4. खुशवंत सिंह के यूनिवर्सिटी में प्रवेश लेते ही दादी माँ ने निरासक्त भाव से अपना अलगाव स्वीकार कर लिया। वे दिन–भर अपने चरखे पर बैठी रहतीं और कभी–कभी ही किसी से बोलतीं। सवेरे से शाम तक सूत कातती रहतीं और अपनी प्रार्थना दोहराती जातीं। 5. दादी माँ दिनभर चरखा चलाती रहती थीं। दोपहर को थोड़ा सा आराम करतीं और गौरैयों को दाना डालतीं। 6. सूर्यास्त के समय सूर्य की सुनहरी आभा उनके कमरे और सामने के बरामदे को प्रकाशित कर रही थी। बरामदे से लेकर कमरे तक, जहाँ उनका पार्थिव शरीर लाल कपड़े में लिपटा निस्पंद पड़ा था, एक अजब ही दृश्य नज़र आया। हज़ारों की संख्या में गौरैयाँ फर्श पर बैठी थीं। कहीं कोई चहचहाहट नहीं थी। खुशवंत सिंह व उनके परिवारवालों ने रोटियों के छोटे–छोटे टुकड़े लिए और चिड़ियों की ओर फेंके। चिड़ियों ने रोटियों की तरफ़ देखा तक नहीं। जब खुशवंत सिंह परिवार सहित दादी माँ के शव को उठाकर चल पड़े, तो चिड़ियाँ धीरे–से नि:शब्द सी उड़ गईं। **भाषा की बात–(क)** 1. बूढ़ी 2. काली 3. वास्तविक 4. गाँव **(ख) संसार**–दुनिया, विश्व **निर्धन**–गरीब, दीन **घर**–गृह, आलय **माँ**–माता, जननी **पिता**–जनक, तात **(ग)** स्वयं करें। **करने की बारी**–स्वयं करें।

11. हमारा राष्ट्रीय ध्वज

(क) 1. 1600 ई० 2. निवेदिता 3. 1917 ई० में 4. अहमदाबाद में 5. 1930 ई० तक **(ख)** 1. गरुड़ध्वज 2. राजपूत 3. तुगलक 4. बालगंगाधर तिलक, डॉ० एनी बेसेंट 5. त्याग **(ग)** 1. (iv) 2. (v) 3. (i) 4. (ii) 5. (iii) **(घ)** 1. राष्ट्रीय ध्वज हमें शांतिपूर्वक एकजुट रहने, देश के लिए बलिदान करने व निरंतर प्रगति करने की प्रेरणा देता है। 2. सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त झंडे पर एकसिंगा एवं धूपदानी अंकित है। 3. स्वतंत्रता संग्राम के शुरू के दिनों में अमेरिका, जर्मनी और मेसोपोटामिया में गदर पार्टी के झंडे का उपयोग हुआ। 4. सिस्टर निवेदिता स्वामी विवेकानंद की आयरिश शिष्या थीं। उनके द्वारा तैयार झंडा लाल एवं वर्गाकार था। चारों किनारों पर 108 ज्योतियाँ बनी हुई थीं और बीच में पीले रंग में बंगला अक्षरों में 'वंदे' और दाईं ओर 'मातरम्' अंकित था। 5. मैडम कामा द्वारा तैयार किया गया झंडा देखने में, करीब-करीब कलकत्ता झंडे के जैसा ही था। ऊपर हरे रंग की पट्टी पर आठ कमल अंकित थे। बीच में सुनहरी पट्टी पर देवनागरी में 'वंदे मातरम्' अंकित था। 6. 27 जून, 1947 को स्वतंत्र भारत के झंडे के विषय में सुझाव देने के लिए, एक अस्थाई समिति गठित की गई। समिति ने विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय किया, कि कांग्रेसी तिरंगे में कुछ परिवर्तन किया जाए, ताकि यह सभी दलों एवं संप्रदायों को स्वीकार्य हो। झंडे के ऊपरी भाग में केसरिया पट्टी, बीच में सफ़ेद पट्टी के बीचोंबीच अशोक के सारनाथ स्तंभ के चक्र की हू-ब-हू प्रतिकृति, गहरे नीले रंग में बनी हो। झंडे में सबसे नीचे हरे रंग की पट्टी हो। झंडे की लंबाई-चौड़ाई का अनुपात 3:2 रखा गया। यह 22 जुलाई, 1947 को संविधान सभा द्वारा स्वीकृत किया गया। 7. राष्ट्रीय ध्वज राष्ट्रीय त्योहारों पर फहराया जाता है। इसे सूर्योदय पर फहराया जाता है व सूर्यास्त होने पर उतार लिया जाता है। **भाषा की बात–(क)** स्वयं करें। **(ख) व्यक्तिवाचक–**स्वामी विवेकानंद, कलकत्ता, निवेदिता, दिल्ली। **भाववाचक–** स्वतंत्रता, गौरव, लोकप्रियता **जातिवाचक–** शिष्या, ध्वज, राष्ट्र, सिस्टर, नगर **(ग)** परतंत्रता, कृत्रिम, गुरु, खत्म, धनी, असभ्य **(घ)** झंडे, मुहरें, देवियाँ, प्रथाएँ, संहिताएँ, कहानियाँ **(ङ)** ध्वज, वट, देव, दिवस, आजादी, छात्रा, बँटवारा, पहला, प्रारंभ, प्रयोग।

12. सुनामी

(क) 1. ये दोनों 2. सौ फुट 3. 800-1200 किमी०/घंटा **(ख)** 1. भूकंप 2. राहत प्रबंधन 3. ज्वालामुखी 4. 800 से 1200 किमी०/घंटा 5. द्वीपों **(ग)** 1. सुनामी लहरों ने दक्षिण भारत में न केवल हज़ारों लोगों को असमय ही मृत्यु की गोद में सुला दिया, बल्कि इनके कारण वहाँ अरबों की संपत्ति भी नष्ट हो गई। उद्योग-व्यापार छिन्न-भिन्न हो गया। बड़े-बड़े भवन और आस्थाओं के केंद्र गिरजाघर, मंदिर आदि मिट्टी में मिल गए। पर्यटन उद्योग पूरी तरह उजड़ गया। संपूर्ण आधारभूत व्यवस्थाएँ छिन्न-भिन्न हो गईं। 2. सुनामी लहरों से अंडमान निकोबार में आदिवासी जनजातियों पर आए संकट से, प्राचीन सभ्यता और सांस्कृतिक धरोहर के नष्ट होने का खतरा पैदा हो गया। 3. **उपसर्ग वाले शब्द–**महाविनाश=महा+विनाश, असमय=अ+समय, आधारभूत=आधार+भूत, विनष्ट=वि+नष्ट **प्रत्यय वाले शब्द–** सभ्यता=सभ्य+ता, सांस्कृतिक=संस्कृति+इक **(घ)** 1. सुनामी लहर समुद्री लहर होती है, यह समुद्र के निचले तल में भूकंप आने से उत्पन्न होती है। 2. जब समुद्र के नीचे स्थित पृथ्वी की प्लेट एक-दूसरे से टकराती हैं तो समुद्री भूकंप आता है। 3. जिस क्षेत्र में सुनामी लहरें पहुँचती हैं, वहाँ ये भयंकर विनाशलीला मचा देती हैं। कभी-कभी तो इनकी पहुँच में आनेवाले शहर-गाँव पूरी तरह नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं।

वहाँ देखने से लगता ही नहीं, कि यहाँ कभी विशाल इमारतें और मानव-बस्तियाँ थीं। भयंकर सुनामी लहरें जिस स्थान को अपनी चपेट में लेती हैं, वहाँ का भूगोल ही बदल देती हैं। अनेक द्वीप जलमग्न हो जाते हैं या निर्जन हो जाते हैं। कई द्वीपों का अस्तित्व ही मिट जाता है। नदियों की धाराओं के मार्ग बदल जाते हैं। 4. सुनामी लहरों ने भारत में एक महाविनाशलीला रच दी। इसने दक्षिण भारत में न केवल हज़ारों लोगों को असमय ही मृत्यु की गोद में सुला दिया, बल्कि इनके कारण वहाँ अरबों रुपये की संपत्ति भी नष्ट हो गई। उद्योग-व्यापार छिन्न-भिन्न हो गया। बड़े-बड़े भवन और आस्थाओं के केंद्र गिरजाघर, मंदिर आदि मिट्टी में मिल गए। पर्यटन उद्योग पूरी तरह उजड़ गया। संपूर्ण आधारभूत व्यवस्थाएँ छिन्न-भिन्न हो गईं। अंडमान-निकोबार में तो आदिवासी जनजातियों पर आए संकट से, प्राचीन सभ्यता और सांस्कृतिक धरोहर के ही विनष्ट होने का ख़तरा पैदा हो गया। 5. रूस, अमेरिका, जापान, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, स्वीडन और न्यूज़ीलैंड जैसे देशों में न केवल आपदा की पूर्व चेतावनी प्रणाली है, बल्कि राहत प्रबंधन की भी प्रणाली काफ़ी चुस्त है। इन देशों में विशेष रूप से आपदा से निपटने के लिए चिकित्साकर्मियों, डॉक्टरों और प्रशिक्षित कुत्तों की फ़ौज होती है, जो मलबे में दबे लोगों को जीवित बाहर निकालने में दक्ष होती है। जापान के बारे में तो यह कहा जाता है, कि जापानी आपदा प्रबंधन प्रणाली से भूकंप और सुनामी ने हार मान ली है। **भाषा की बात–(क) समुद्र**–सागर, जलधि **नदी**–सरिता, तरंगिणी **देश**–वतन, राष्ट्र **भारत**–हिंदुस्तान, आर्यवर्त **भवन**–इमारत, मकान **देव**–देवता, निर्झर, प्रभु **(ख) उद्देश्य**–1. अगस्त्य ऋषि 2. भारत 3. श्रीराम 4. सुनामी **विधेय**–1. ने समुद्र को पी लिया था। 2. को आपदा प्रबंधन के लिए ठोस नीति बनानी होगी। 3. समुद्र पर क्रोधित हो उठे। 4. एक जापानी शब्द है। **(ग) द्ध**–शुद्ध, क्रुद्ध **क्क**–पक्का, चक्का **त्व**–तत्व, व्यक्तित्व **ट्ट**–टट्टू, लट्टू **प्य**–प्याला, प्यार **(घ)** स्वयं करें। **(ङ)** एक, अंतिम, दानव, पश्चिम, जीत, अप्रसन्न **करने की बारी**–स्वयं करें।

13. अतिथि देवो भवः

(क) 1. सुंदर 2. चंपा 3. फल-फूल 4. महाराणा प्रताप की पत्नी 5. अकबर **(ख)** 1. सुंदर 2. वन 3. अतिथि 4. चंपा 5. अकबर **(ग)** 1. चंपा ने सुंदर से 2. सुंदर ने चंपा से 3. गुणवती ने महाराणा प्रताप से 4. चंपा ने महाराणा प्रताप से **(घ)** 1. सुंदर ने अपनी बहन से कहा–मैं तो इस समय भूख से व्याकुल हो रहा हूँ। तुम जानती हो, कल मुझे रोटी का एक छोटा-सा टुकड़ा ही खाने को मिला था। अब नहीं रहा जाता बहन। चलो, नदी का दो घूँट जल पीकर ही भूख शांत करें। 2. चंपा ने सुंदर को नदी के पानी से प्यास बुझाने के लिए मना इसलिए किया क्योंकि उसके पास बची हुई रोटियाँ थीं। 3. दो-तीन दिन से चंपा ने अपने हिस्से की रोटियाँ बचाकर सुंदर के लिए रखी थीं। सुंदर सो गया था, इसलिए अब वह नहीं खा सकता था। इसलिए चंपा ने कहा कि वह अतिथि को भोजन कराएगी। 4. जब चंपा ने कहा कि केवल अकबर के आगे अपना मस्तक न झुकाने में आत्मा का सुख है, इसी में हृदय को संतोष है। तब अतिथि आश्चर्यचकित हो गया। 5. चंपा महाराणा प्रताप से यह प्रतिज्ञा लेने को कहती है कि हम कभी भी अपना मस्तक अकबर के सामने नहीं झुकाएँगे। 6. क्योंकि राणा प्रताप को लगा कि उनके ही कारण उनके बच्चों की दुर्गति हो रही है। यदि वे अकबर की बात मानकर उससे संधि कर लेते, तो आज अरावली के वीरान वन में उन्हें यह सब न देखना पड़ता। **भाषा की बात–(क)** 1. सुंदर माला तोड़कर भूमि पर फेंक देता है। 2. झोंपड़ी में अन्न का दाना भी नहीं है। 3. रोटियाँ सूखी है, परंतु अमृत का स्वाद देती हैं।

4. अतिथि आश्चर्यचकित होकर चंपा की ओर देखता है। **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** पिताजी यह आप क्या कह रहे हैं? क्या आप अकबर से संधि कर लेंगे? क्या आप कष्टों से घबराकर अमर सुख को नष्ट कर देंगे? क्या आपने इसीलिए इतने दिनों तक वनों की खाक छानी? क्या हम लोगों ने इसीलिए इतने दिनों तक वन के फल-फूल खाकर अपने दिन बिताए? **करने की बारी**–स्वयं करें।

15. मीरा की पदावली

(क) 1. कृष्ण की 2. श्रीकृष्ण को 3. राम का नाम **(ख)** 1. पायो जी मैंने राम रतन धन पायो। 2. माई री मैं तो लियो गोविंदो मोल। 3. मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।। 4. बसो मेरे नैनन में नंदलाल। **(ग)** 1. मीरा को अपने इष्ट देव श्रीकृष्ण के लिए अपने रिश्तेदार, परिवार सब कुछ छोड़ना पड़ा। 2. मीरा ने गोविंद को अपनी भक्ति से खरीदा। कोई इसे सस्ता तो कोई इसे महँगा कहता है। 3. मीरा को भगवान श्री कृष्ण की भक्ति की चाह का दर्द है कृष्ण से भेंट होना ही उसकी दवा है। 4. मीरा ने अपने आँसुओं से प्रेम की लता को सींचा है, अब उस लता से आनंद प्राप्त हुआ। **भाषा की बात–(क)** रसाल, माल, खोवायो, सवायो, तोल, मोल, होय, खोई **(ख)** नयन, कृपा, विशाल, भक्ति, शब्द, पीड़ा, विपत्ति, दर्शन **(ग)** स्वयं करें। **(घ) प्रभु**–ईश्वर, परमात्मा **नैन**–नेत्र, चक्षु **गगन**–आकाश, नभ **जगत**–संसार, विश्व **पति**–वर, दुल्हा **करने की बारी**–स्वयं करें।

16. विकास

(क) 1. मकान 2. ईश्वर की मूर्ति बनाई 3. गिरजाघर 4. ईश्वर को 5. मस्जिद का **(ख)** 1. सृष्टि, रचना 2. महिमा 3. धूप-दीप, घबराया 4. भयानक 5. पैसे **(ग)** 1. मनुष्य के मन में ईश्वर की पूजा और स्मरण के लिए एक मकान बनाने की इच्छा जागृत हुई। 2. लंबे, मोटे वृक्षों की नकल में उसने खंभे बनाए। ऊँचाई के लिए पहाड़ों की नकल की, गुंबद बनाया आसमान के अनुकरण पर और इस प्रकार मनुष्य ने ''ईश्वर का घर'' तैयार कर लिया। 3. मनुष्य ने दूसरा मकान 'गिरजाघर' तैयार किया-बिल्कुल नए ढंग का। ईश्वर की मूर्ति में भी किंचित् परिवर्तन कर उसे दूसरे रुख, दूसरी वेदी पर बैठाया। श्रद्धा, विश्वास, लोक और परलोक के सपने देखते मनुष्य ने, 'अपने' लिए गिरजाघर में भगवान को बुलाने की कोशिश की। 4. घबराहट में आदमी ने सोचा-'यह मंदिर....छि:। अफ़ीमची का अड्डा है-ईश्वर का विश्राम-स्थल नहीं। यह मूर्ति! कठोर पत्थर है, मैं इन दोनों को मटियामेट कर, अब एक ऐसा घर बनाऊँगा, जिसमें ईश्वर के निराकार रूप की पूजोपासना की जा सके। 5. तीसरे प्रयास में मनुष्य ने मस्जिद का निर्माण किया। नहीं इससे उसे संतुष्टि नहीं मिली। 6. अंत में मनुष्य ने सारा ख़ाक-पत्थर, सारी माया जोड़कर आधुनिकतम डिजाइन का एक मकान तैयार किया और उसका नाम रखा–'जनरल स्टोर्स'। **भाषा की बात–(क)** सूर्योदय, नरोत्तम, गणेशोत्सव, लंबोदर, विद्यालय, महोदय, भाग्योदय, विवाहोत्सव **(ख)** अंधकार, पुराना, जीतना, अविश्वास, निराकार, मुलायम **(ग)** स्वयं करें। **करने की बारी**–स्वयं करें।

17. सर्वोत्तम मित्र

(क) 1. पुस्तक 2. पुस्तकों से 3. संपत्ति 4. पुस्तकों को **(ख)** 1. पुस्तकों 2. पैशाचिक 3. देशकाल 4. तानाशाह 5. पुस्तकों **(ग)** 1. हम जो सोचते हैं और जो पुस्तकों में होता है– दोनों में अंतर यह है कि हमारा ज्ञान और अनुभव सीमित होता है। अपना निजी होता है। स्वार्थ के कारण भ्रामक होता है। पुस्तकों में उच्च विचारकों और विशाल हृदय वाले विद्‌वानों के जीवनानुभव सुरक्षित एवं संचित होते हैं। 2. पुस्तकें हमें अपनी छोटी दुनिया से, जिस पर हमारा बड़ा ममत्व रहता है, ऊपर उठा देती हैं। आँखों में एक अजीब, शक्तिशाली ज्योति आ जाती है। विशाल विश्व का परिचय पाकर हम फूले नहीं समाते हैं। आत्मा का विस्तार हो जाता है। स्वर्गीय विभूतियों का दरवाज़ा खुल जाता है। एक कलात्मक आचार हमारे विचारों में झलकने लगता है। इस प्रकार पुस्तकें हमें छोटी दुनिया से बड़ी दुनिया में ले जाती हैं। 3. लेखक ने इस पाठ में कालिदास, सूरदास, तुलसीदास, होमर नामक प्रसिद्‌ध साहित्यकारों व सोनारतरी, गीता, महाभारत, रामायण नामक प्रसिद्‌ध रचनाओं का उल्लेख किया है। 4. स्वयं करें। 5. पुस्तकों में महान लोगों द्‌वारा जीवन से संबंधित सभी दृष्टिकोणों का वर्णन होता है, जिन्हें पढ़कर हमारा पथ-प्रदर्शन होता है। **भाषा की बात–(क)** 1. जनों का समूह 2. युग का प्रवर्तक 3. स्वर्ण का आभूषण 4. आत्मा का विस्तार 5. रहस्य का उद्‌घाटन **(ख)** 1. फूल मुरझा जाएँगे। 2. पुस्तकें हमारा पथ-प्रदर्शन करती हैं। 3. सुदूर भूत में हमारी पहुँच नहीं थी। **(ग)** 1. नेत्र, चक्षु 2. मित्र, सखा 3. निशा, रजनी 4. दिवस, वार 5. गृह, आलय **करने की बारी**–स्वयं करें।

18. शांति

(क) 1. सूर्य 2. चील को 3. चील के बच्चे को 4. संन्यासी 5. कमंडल **(ख)** 1. राम 2. दुनिया 3. पलभर 4. धरती 5. आवाज **(ग)** 1. संन्यासी ने स्वयं से 2. चकुले ने चील से 3. भीलपुत्र ने अपने पिता से 4. सँपोले ने अपनी माँ से 5. संन्यासी ने स्वयं से **(घ)** 1. चील ने अपनी संतान को हिदायत दी, ''तुम्हारे पंख अब भी कमज़ोर हैं। तुम अपने घोंसले से मत निकलना!'' भील अपने इकलौते, प्यारे बेटे से बोला, ''कल तुम अपने घर से निकलकर, जंगल में रंग-बिरंगे फूलों को बटोरते हुए दूर तक भटक रहे थे न? आज वैसी हरकत मत करना। जंगल के इन झाड़-झंखाड़ों में ज़हरीले साँप होते हैं। उनके काटने का डर हमेशा बना होता है। अपना ध्यान रखना।'' साँपिन ने अपनी संतान से कहा ''मैं अभी पलक झपकते ही आ जाऊँगी। तू अपना ध्यान रखना। सतर्क रहना। झाड़-झंखाड़ों की छाया को छोड़कर बाहर मत जाना।'' 2. क्योंकि तीनों के बच्चे अपने प्राकृतिक स्वभाव से अनभिज्ञ थे और परोपकार की बातें कर रहे थे। 3. जब संन्यासी, अर्घ्यदान से निवृत्त होकर अपनी पर्णकुटी की ओर लौट रहा था, तो दूर से एक दृश्य को देखकर पलभर उसे अपनी माँग पूरी होने का भ्रम हुआ। चील, साँप और आदमी एक-दूसरे की बगल में सोए थे। साँप को न चील का डर, न आदमी को साँप का डर। परंतु जब वह आगे बढ़ा तो सहसा चौंक उठा। उसके रोंगटे खड़े हो गए। जैसे ही उसने तीनों का शव देखा तो उसका भ्रम टूट गया। 4. ईश्वर की लीला अपरंपार है। ईश्वर द्‌वारा रचित संसार में मनुष्य की इच्छा के अनुसार कार्य नहीं हो सकते। **भाषा की बात–(क) नभ**–आकाश, आसमान **बादल**–घन, जलद **वसुधा**–धरती, भूमि

सूरज–सूर्य, दिनकर **शत्रु**– दुश्मन, अरि **(ख)** 1. (iv) 2. (v) 3. (vi) 4. (vii) 5. (iii) 6. (i) 7. (ii) **(ग)** 1. हमारे पड़ोस में शर्मा परिवार वाले सबकी सहायता करने को तत्पर रहते हैं। 2. आखेट का समय होते ही भील अपना धनुष-बाण लेकर निकल पड़ा। 3. सँपोले को चील द्वारा पकड़ते ही उसकी माँ रोने लगी। 4. वह घर से जंगल की ओर निकलकर वहाँ रंग-बिरंगे फूलों को बटोरने में लग गया। 5. शांति का परम उपासक संन्यासी चारों ओर शांति चाहता था। **करने की बारी**–स्वयं करें।

19. गिरिधर की कुंडलियाँ

(क) 1. संपत्ति प्राप्त होने का 2. गुणवान व्यक्ति का 3. चंचल **(ख)** बिना विचारे कार्य करने से वह कार्य बिगड़ जाता है जिससे व्यक्ति दुनिया में हँसी का पात्र बनता है। हँसी का पात्र बनने से उसे चैन नहीं मिलता तथा खाने-पीने, सम्मान व आनंद के कार्य अच्छे नहीं लगते। **(ग)** 1. कवि ने गुण-अवगुण को स्पष्ट करने के लिए यह उदाहरण दिया है कि गुण को हजार लोग पसंद करते हैं अवगुण को कोई पसंद नहीं करता जैसे कौए व कोयल में सभी कोयल की आवाज़ सुनना पसंद करते हैं। 2. लोगों को कोयल उसकी मधुर बोली के कारण प्रिय होती है तथा कौआ उसकी कर्कश बोली के कारण अप्रिय होता है। 3. ग्राहक, स्वीकार, मनमोहक, अपवित्र **(घ)** 1. हम संसार में सम्मान सोच-विचारकर गए अच्छे व परोपकारी कार्य करके प्राप्त कर सकते हैं। 2. बिना सोच-विचारकर किए कार्य करने पर अपना कार्य बिगड़ता है, लोग हँसी उड़ाते हैं सम्मान चला जाता है, खाने-पीने में मन नहीं लगता। 3. हमें दौलत पाकर भी अभिमान इसलिए नहीं करना चाहिए क्योंकि दौलत हमारे पास हमेशा नहीं रहती। 4. कवि बीती बातों को भुलाकर आगे की सुध लेने की बात इसलिए कहता है क्योंकि बीती बातों को याद करके व्यक्ति को मानसिक दु:ख होता है और वर्तमान में कार्य करने में भी उसका मन नहीं लगता जिससे वह उन्नति नहीं कर पाता तथा वर्तमान में सुखी नहीं रह पाता। 5. जो कार्य किया जा सके उसी में मन लगाना चाहिए। क्योंकि उससे ही मानसिक संतुष्टि व सुख प्राप्त होता है। **भाषा की बात–(क) चैन**–च्+ऐ+न्+अ **कोकिल**–क् + ओ + क् + इ + ल् + अ **सुहावन**–स् + उ + ह् + आ + व् + अ + न् + अ **ग्राहक**–ग् + र् + आ + ह् + अ + क् + अ **दौलत**–द् + औ + ल् + अ + त् + अ **(ख) कोयल**–कोकिल, बसंतदूत **संसार**–विश्व, दुनिया **दौलत**–धन, संपदा **पाहुन**–अतिथि, मेहमान **करने की बारी**–स्वयं करें।

21. निर्मला और सयाल

(क) 1. सयाल 2. कलगी बेन 3. मुर्गे 4. दो-चार बकरियाँ 5. ये दोनों **(ख)** 1. स्कूल 2. मित्र 3. पल्लू 4. साँप 5. पसीना **(ग)** 1. निर्मला ने सयाल से 2. सयाल ने निर्मला से 3. निर्मला ने स्वयं से 4. सयाल ने निर्मला से 5. निर्मला ने सयाल से 6. सयाल ने निर्मला से **(घ)** 1. साँप की पकड़ इतनी सख़्त थी, कि निर्मला को लगा, कि उसकी हड्डियाँ चूर-चूर हो जाएँगी। लेकिन उस पीड़ा से भी ज़्यादा तो उसे इस बात का डर था, कि साँप उसे खा जाएगा। उसे लगा, कि वह मर जाएगी। 2. सयाल ने अजगर के जबड़े फैला दिए। जबड़े खुलते ही निर्मला ने उसके जबड़े से

अपना पैर मुक्त कर लिया, लेकिन कुंडली अभी भी कसी हुई थी। आखिर सयाल ने ज़ोर लगाया, तो कुंडली का दबाव कम हुआ। फिर उसने एक बार इतनी ज़ोर से झटका दिया कि निर्मला साँप की कुंडली से छूट गई। 3. क्योंकि उसने उसे अजगर से बचाया था। 4. निर्मला सयाल से चिढ़ती थी परंतु सयाल ने अजगर से उसके प्राण बचाए तो वह उसे अपना परम मित्र मानने लगी। इस प्रकार उसका हृदय-परिवर्तन हो गया। 5. सयाल बहादुर, विश्वासपात्र व सच्ची मित्र थी। **भाषा की बात– (क) सहेली**–सखी, मित्र **साँप**–सर्प, व्याल **जंगल**–अरण्य, वन **चिड़िया**–पक्षी, खग **(ख)** पाषाण, ग्राम, अश्रु, अक्षि, सत्य, दंत, हस्त, कार्य **(ग)** कुरूप, डरपोक, असाधारण, शहर, अमीरी, बेमज़ा, पास, अनिश्चय **करने की बारी**–स्वयं करें।

22. वर्षगाँठ

(क) 1. सन् 1838 में 2. जफ़र अली 3. कल्याणी 4. बारह वर्ष 5. सुजान के घर **(ख)** 1. वर्षगाँठ 2. खीर 3. बलकरन 4. बर्तन 5. तलवार **(ग)** 1. बलकरन ने माँ अपनी से 2. हिंदू ग्रामीण ने कल्याणी से 3. जफ़र अली ने सैनिको से 4. तैमूर ने बलकरन से 5. बलकरन ने कल्याणी से **(घ)** 1. क्योंकि खीर बनाने के लिए दूध नहीं आया था। 2. क्योंकि उस समय उन लोगों को काफी भूख लगी थी। 3. बलकरन एक छोटे चाकू की मदद से तैमूर से साहस के साथ लड़ने के लिए तैयार रहता है। 4. तैमूर उसकी उम्र एवं साहस को देखकर ऐसा कहता है। 5. क्योंकि उसे निर्दय तैमूर ने जीवित छोड़ दिया था। **भाषा की बात–(क)** क्षमता, तुच्छ, ज्ञात, अधिकार, आदेश, नमस्ते **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** 1. (तीव्र स्वर में) कमबख़्तों। इस तरह तुम हिंदुस्तान की दौलत गाजी तैमूर के खज़ाने में भरोगे? जब तुम्हें कत्ल करना चाहिए, तब तुम आराम से तख़्त पर बैठे हो। जब तुम्हें जवाहरात ढूँढ़ने चाहिए, तब तुम नाश्ता करते हो और जब तुम्हें धावा बोलना चाहिए, तब तुम लोग मिलकर कहकहे लगाते हो! जवाब दो। **करने की बारी**–स्वयं करें।

23. अनेकता में एकता

(क) 1. चेरापूँजी में 2. आंध्र प्रदेश में 3. संस्कृत भाषा **(ख)** 1. अनेकताओं 2. हिंदी 3. लिपियों 4. रामचंद्र **(ग)** 1. भारत के इतिहास की शिक्षा यह है, कि इस देश को एक रखने के काम में यहाँ के राजाओं को जो भी सफलता मिली, वह अधिक टिकाऊ न हो सकी। इस देश के प्राकृतिक ढाँचे में ही कोई ऐसी बात थी, जो सारे देश को एक रखने के विरुद्ध जाती थी। स्वार्थी, कमज़ोर और अदूरदर्शी राजाओं के कारण यह एकता टूट जाती थी। 2. भारत के उत्तरी छोर पर कश्मीर स्थित है, जिसकी जलवायु मध्य एशिया की जलवायु के समान है। इसके विपरीत भारत के दक्षिणी छोर पर कुमारी अंतरीप है, जहाँ भीषण गर्मी पड़ती है। इसी देश में चेरापूँजी भी है, जहाँ साल में 500 इंच से अधिक वर्षा होती है, और दूसरी ओर थार की मरुभूमि भी है, जहाँ वर्षा होती ही नहीं, अथवा नाममात्र की होती है। 3. भारत में वेशभूषा और खान-पान के क्षेत्र में भी विविधता के दर्शन होते हैं। ये भेद प्रत्यक्ष हैं। ठंडे पहाड़ी क्षेत्रों में पूरे वर्ष गर्म कपड़े पहनने पड़ते हैं, जबकि समुद्र तटीय क्षेत्रों में एक ही प्रकार के कपड़ों से काम चल जाता है। दक्षिणी भारत के राज्यों में पुरुष लुँगी पहनकर रहते हैं। देश के अलग-अलग भागों में अलग-अलग व्यंजन प्रचलित हैं; जैसे-पंजाब में सरसों का साग व मक्की की रोटी, दक्षिण भारत में इडली डोसा, साँभर, उत्तरी

भारत में गेहूँ की रोटी व विभिन्न सब्जियाँ, कढ़ी चावल तथा समुद्र तटीय राज्यों में चावल-मछली मुख्य भोजन है। **भाषा की बात-(क)** एकता, क्रीड़ास्थल, अदूरदर्शी, परिणाम, सोभाग्य, अद्‌भुत **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** ज्यादा, खाना, अनेक, कोशिश, मुश्किल, झगड़ा **करने की बारी**-स्वयं करें।

24. दिलवाड़ा के जैन मंदिर

(क) 1. 11वीं से 13वीं शताब्दी तक 2. विमलवसाही मंदिर 3. ऋषभदेव **(ख)** 1. अंबाजी 2. लूनवसाही 3. पाँच 4. आकृति 5. 14 **(ग)** 1. लूनवसाही मंदिर के निर्माण में 1500 कारीगरों को 14 वर्ष का समय लगा। 2.विमलवसाही मंदिर चार मुख्य हिस्सों में बँटा हुआ है। सीढ़ियों से उतरकर प्रांगण में सामने की तरफ़ रंग मंडप या सभा मंडप बना हुआ है, जिसके आगे नवचौकी और उसके बाद गर्भ गृह है, जहाँ आदिनाथ की मूर्ति विराजमान है। 3. लूनवसाही मंदिर संगमरमर के पत्थरों को तराश कर बनाया हुआ है। इसमें फूल-पत्तियाँ, नक्काशीदार छतें, पशु-पक्षियों की शानदार संगमरमर की आकृतियाँ, सफ़ेद स्तंभों पर बारीकी से उकेरी गई सुंदर बेलें, जालीदार नक्काशी से सजे तोरण हैं, जो बरबस ही पर्यटकों को अपनी ओर खींच लेते हैं! 4. दिलवाड़ा के मंदिर दस्तकारी के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। इनमें संगमरमर पर इतनी बारीकी से आकृतियाँ बनाई गई हैं, कि वे सजीव प्रतीत होती हैं। वास्तव में दिलवाड़ा का यह मंदिर पाँच मंदिरों का समूह है। ये जैन धर्म के तीर्थंकरों को समर्पित मंदिर हैं। इसका केंद्रीय सफ़ेद गुंबद देखने लायक है, जिसके भीतरी भाग में भव्य पच्चीकारी की गई है। छत पर 16 विद्‌या की देवियों की मूर्तियाँ अंकित की गई हैं। **भाषा की बात-(क) रास्ता**-पथ, मार्ग **पर्वत**-नग, गिरि **दिन**-दिवस, वार **सुबह**-प्रभात, भोर **शासक**-राजा, नृप **(ख) मूल शब्द**-अचंभा, दस्तकार, शान, खूबसूरत **प्रत्यय**-इत, ई, दार, ई **(ग) उपसर्ग**-प्र, प्रति, स, वि **मूल शब्द**-सिद्‌ध, निधि, जीव, देशी **(घ) अद्‌वितीय**-जिसके समान दूसरा न हो **नक्काशी**-धातु, पत्थर या लकड़ी पर **बेल**-बूटे बनाने का कार्य **पर्यटक**-देश-विदेश में घूमने-फिरने वाला व्यक्ति **शताब्दी**-सौ वर्षों का समय **(ङ)** काला, बदसूरत, अविश्वास, रंक, निर्जीव, ध्वंस **करने की बारी**-स्वयं करें।